महिला सशक्तिकरण और हिंदी कविता

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले श्री शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, कोल्हापुर

साहित्यकार युग के प्रवर्तक होते है। सामाजिक चित्रण के साथ तत्कालिन परिस्थिति का प्रभाव भी साहित्य में चित्रित होता है। हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल एवं वर्तमान समय तक नारी चित्रण अविभाज्य अंग रहा है। नख से लेकर शिख तक के श्रृंगारिक वर्णन की यात्रा आधुनिक काल में भी छिंटे-बौछारे रूप में प्रस्तुत है। पौराणिक साहित्य से आधुनिक साहित्य तक महिलाओं की भूमिका पग-पग पर बदलती दृष्टिगत होती है। एक ओर नारी को पूजनीय माना गया है जैसे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तंत्र रमन्ते देवता:' कहा गया है तो दूसरी तरफ 'कनक कामिनी त्यागै दोई, सो जोगेश्वर निरभै होई।' ऐसा कहा गया है जिसका अर्थ है वैराग्य मार्ग में नारी को बाधा माना गया है। वहीं संत कबीर कहते है- 'कबिरा तिनकी कौन गति जो नित नारी के संग' इसतरह नारी को विविध दृष्टि से देखा गया है। दूसरी ओर नारी वीरता के प्रति भी आकर्षित दिखाई देती है- 'भल्ला हुआ जो मरिआ, भगिनी म्हारा कंतु। लज्जेयजं तु वयंसियउ, जउ भग्गा धरू अंतु।' इसतरह हिंदी साहित्य में नारी का विविध भूमिका में चित्रण हुआ है। अतः हिंदी कविता में चित्रित महिलाओं की बदलती भूमिका पर दृष्टि डालते है।

हिंदी साहित्य अंतर्गत भारतेंदु युग नवचेतना का युग मानना गलत नहीं होगा। भारत में इस समय समस्त समाज के साथ अन्याय, शोषण आदि चल रहा था लेकिन सबसे दयनीय यह बात थी कि नारी की दशा अत्यंत शोचनीय थी। बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा प्रथा, केश वपन ने नारी का जीवन नरकीय बना दिया था। ऐसे में महात्मा गांधी, श्रीमती ॲनी बेझंट, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, राजा राम मोहन राय आदि समाज सुधारकों ने भारतीय नारी की अमानुष दशा को सुधारने का एवं महत्तम कार्य किया। ऐसे महान विभूतियों का प्रभाव तत्कालीन साहित्यकारों पर होना स्वाभाविक था फलत: हिंदी साहित्य ने धीरे-धीरे करवट बदली और कवियों ने नारी के प्रति आदर्शात्मक लेखनी चलाई।

"जो हरि सोई राधिका, जो शिव सोई शक्ति।
जो नारी सोई पुरुष या में कछु न विभक्ति।
नारी नर अरधंग की साँचे ही स्वामिनी होय।"[1]

भारतेंदु जी साफ-साफ कहते है कि नर-नारी समान है। वे सीता, अनुसूया, अरुंधती आदि का उदाहरण देकर जननी रूप में उसकी प्रशंसा करते है और नारी को पढ़ने लिखने की भी बात करते है।

"सहणी सवरी हूँ, सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजानै पूत सम, बलम सजागे नाह।"[2]

देश के प्रति उदार, उदात्त, देशप्रेम की भावना रखने वाली स्त्री के प्रति कौन नहीं गर्व करेगा ? नारी विषयक दृष्टिकोण यथार्थवादी रखते हुए बाल विवाह की निंदा करते हुए पं. प्रतापनारायण मिश्र ने लिखा है-

"बाल विवाह ने बल हनि रक्खा, चलते काया डोली है।
नहि आने की मुख पर लाली, वृथा बिगाड़ी रोली है।"[3]

इसतरह समस्त भारत की नारियों के प्रति दशा सुधारने का प्रयास अपने साहित्य द्वारा किया है। इसी धारा में नारी के प्रति कवि कहते है-

" नारी के सुधारे जग में प्रसिद्ध होत
नारी के संवारे होत सिध्द धन बल है।"[4]

नारी की उन्नति में ही जग का सुधार कवि ने बताया है। नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण निराला जी कहते है -

"जो नारी में कामुकता ही देखे,
वे भी क्या मानव हैं?
वे तो हैं बस चांडाल अधम,
वे तो बस पूरे दानव हैं।"[5]

साहित्यकारों ने नारी निंदा को अधर्म माना है। नारी निंदा करनेवाले को दानव कहा है। पशु के समान गृहबंधनों में जकडी नारी के मुक्ति की कामना करता हुआ कवि कहता है-

"मुक्त करो नारी को मानव

चिर बंदिनी नारी को
युग-युग की बर्बर कारा से
जननि सखी, प्यारी को।"[6]

आधुनिक कवि नारी के बंधन मुक्त होने के प्रति विचार स्पष्ट करता है। नारी के परिवर्तन में विश्वास रखता है। आगे 21 वीं शताब्दी में कवि कुँवर नारायण लिखते हैं- "एक माँ संपूर्ण पृथ्वी!"[7]

निष्कर्ष : सार रूप में कहना उचित होगा कि भारत में महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक क्रांति है। महिलाओं को मिले अधिकार, आत्मनिर्भरता और समानता की दिशा में आगे बढ़ना महिला सशक्तिकरण का प्रमुख विषय रहा है। महिला सशक्तिकरण हेतु अनेक कवियों ने अपनी कलम द्वारा ही महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मानसिक उन्नति हेतु प्रेरणा दी है । आत्मनिर्भर एवं सशक्त बकने हेतु उद्‌बोधित किया है। हिंदी कवियों ने काव्य सृजन द्वारा महिलाओं को सम्मान देकर मानवता को सम्मानित किया है।

सन्दर्भ :

1. http://www.hi.m.wikisource.ory
2. हिंदी साहित्य की भूमिका - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्णीय, 183
3. प्रतापलहरी - सम्पादक नारायण प्रसाद अरोड़ा, पृ. 140
4. http://www.hi.m.wikisource.ory
5. हम विषपायी जनम के, नवीन, पृ. 530
6. ग्राम्या, सुमित्रानंदन पंत, पृ. 85
7. आत्मजयी – कवि कुँवर नारायण, पृ. 96